Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ जीवित्पुत्रिका व्रत कथा ॥

॥ जीमूतवाहन सबका मंगल करें ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ जीमूतवाहन और शंखचूड़ ॥

जितिया में जीमूतवाहन की कथा विशेष रूप से सुनाई जाती है। चील और सियारिन की दूसरी लोककथा भी कई क्षेत्रों में प्रचलित है; दोनों के विवरण अलग मिल सकते हैं।

प्राचीन कथा में जीमूतवाहन को दयालु राजकुमार बताया जाता है। एक दिन वन में उन्हें एक वृद्ध नागमाता विलाप करती मिलीं। उनका पुत्र शंखचूड़ गरुड़ का आहार बनने के लिए भेजा जाने वाला था। माता के दुःख ने जीमूतवाहन को विचलित कर दिया।

जीमूतवाहन ने शंखचूड़ को बचाने का निश्चय किया। वे नियत स्थान पर उसके स्थान में जाकर लेट गए। गरुड़ आए और उन्हें उठाकर ले चले। पीड़ा होने पर भी जीमूतवाहन ने अपने निर्णय से पीछे हटना स्वीकार नहीं किया। उनका उद्देश्य किसी माँ को अपने बच्चे के वियोग से बचाना था।

जब गरुड़ को पता चला कि यह नाग नहीं, दूसरे के लिए अपना जीवन देने वाले जीमूतवाहन हैं, तो वे उनके साहस और करुणा से प्रभावित हुए। कथा के अनुसार गरुड़ ने उन्हें छोड़ दिया और नागों को न खाने का संकल्प किया। इस प्रकार शंखचूड़ और अन्य नागों को भी अभय मिला।

कथा का संदेश

जीमूतवाहन का प्रसंग संतान के प्रति माता की चिंता के साथ सभी जीवों के प्रति दया का भाव जगाता है। व्रती अपने बेटे और बेटियों सहित सभी बच्चों की सुरक्षा और सुख की कामना कर सकते हैं।

॥ जीमूतवाहन सबका मंगल करें ॥

॥ चील और सियारिन की लोककथा ॥

एक दूसरी प्रचलित लोककथा में चील और सियारिन सखियाँ थीं। दोनों ने माताओं को जितिया व्रत करते देखा और स्वयं भी संतान के मंगल के लिए व्रत रखने का निश्चय किया। उन्होंने दिन भर संयम और कथा-स्मरण करने का संकल्प लिया।

लोककथा कहती है कि चील ने अपना संकल्प निभाया, जबकि सियारिन भूख लगने पर चुपके से भोजन कर बैठी। बाद में दोनों के जीवन में भिन्न अनुभव हुए। कई रूपों में वे अगले जन्म में मनुष्य के रूप में मिलती हैं और सियारिन को अपनी भूल का बोध होता है।

सखियों का यह प्रसंग वचन की सच्चाई, संयम और भूल स्वीकार करने की सीख के रूप में सुनाया जाता है। इसे किसी परिवार में बच्चे की बीमारी या मृत्यु के लिए माता को दोष देने का आधार न बनाएँ। लोककथा धार्मिक-सांस्कृतिक विश्वास है, वास्तविक जीवन की घटनाओं का कारण नहीं।

व्रत के तीन दिन

जितिया की परंपरा सामान्यतः सप्तमी के नहाय-खाय से शुरू होती है। अष्टमी को मुख्य व्रत और कथा का पाठ होता है, फिर नवमी में पारण किया जाता है। दिन, तिथि और पारण का समय हर वर्ष स्थानीय पंचांग से जाँचें।

॥ सभी संतानों का कल्याण हो ॥